ॐ जय हनुमत वीरा, स्वामी जय हनुमत वीरा ।
संकट मोचन स्वामी, तुम हो रणधीरा ।।ॐ।।
पवन–पुत्र अंजनी–सुत, महिमा अति भारी।
दुःख दारिद्रय मिटाओ, संकट भय हारी।।ॐ।।
बाल समय में तुमने, रवि को भक्ष लियों।
देवन स्तुति किन्हीं, तबहीं छोड़ दियो।।ॐ।।
कपि सुग्रीव राम संग, मैत्री करवाई।
बालीबली मराये, कपिशही गद्दी दिलवाई।।ॐ।।
जारी लंक सिय–सुधि ले आए, वानर हर्षाए।
करज कठिन सुधारे, रघुबर मन भाये।।ॐ।।
शक्ति लगी लक्ष्मण को, भारी सोच भयों।
लाय संजीवन बूटी, दुःख सब दूर कियों।।ॐ।।
ले पाताल अहिरावण, जबहि पैठि गयो।
ताहि मारि प्रभु लाये, जय जयकार भयों।।ॐ।।
घाटा मेहंदी पुर में शोभित दर्शन अति भारी।
मंगल और शनिचर, मेला है जारी।।ॐ।।
श्री बालाजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत इन्द्र हर्षित, मनवांछित फल पावें।।ॐ।।